RAJYA SABHA

Friday, the 4th March, 1994
13th Phalguna, 1915 (Saka)

The house met at eleven of the clock **Mr. Chairman** in the Chair·

OBITUARY REFERENCE

MR. CHAIRMAN : Hon. Members, I refer with profound sorrow to the passing away of Shri Kishan Lal Sharma, a former Member of the Rajya Sabha on the 3rd March, 1994.

Shri Sharma was born at Nathdwara in Rajasthan in 1912. An agriculturist by vocation, Shri Sharma also participated actively in the freedom struggle and underwent imprisonment.

As a social worker, Shri Sharma was connected with welfare activities to secure justice for the weaker sections.

Shri Sharma commenced his legislative career when he became a Member of the Rajasthan State Assembly in 1957. He was elected again to that Assembly in 1967. Shri Sharma represented the State of Rajasthan in this House from April 1974 to April 1980.

In the passing away of Shri Sharma the country has lost a veteran freedom fighter social worker and parliamentarian.

We deeply mourn the passing away of Shr, Kishan Lal Sharma.

I request Members to rise in their places and observe silence as a mark of respect to the memory of the departed.

(Hon. Members then stood in silence for one minute)

MR. CHAIRMAN : Secretary-General will convey to the members of the bereaved family our sense. of profound sorrow and deep sympathy.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में गलतियां

*141. **श्रीमती सरला माहेश्वरी** : क्या **मानव संसाधन विकास** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि एन०सी०ई० आर० टी० द्वारा प्रकाशित कुछ पाठ्यपुस्तकों में कु तथ्यात्मक गलतियां थीं;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि इन पुस्तकों के पुनर्मुद्रण के बावजूद इन गलतियों को संशोधित नहीं किया गया है ; और

(ग) यदि हां, तो इस तरह की लापरवाही के क्या कारण हैं तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि भविष्य में ऐसी गलतियां न हों, क्या कदम उठाने का विचार है ?

मानव संसाधन विकास मंत्री (श्री अर्जुन सिंह) : (क) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की जानकारी में कोई तथ्यपरक गलतियां नहीं लाई गई हैं।

(ख) और (ग) प्रश्न नहीं उठते।

श्रीमती सरला माहेश्वरी : माननीय सभापति महोदय, माननीया मंत्री महोदया ने मेरे प्रश्न का उत्तर नकारात्मक दिया है। हालांकि इस नकारात्मक उत्तर में भी मुझे खुशी हुई होती अगर वास्तविकता में भी यह नकारात्मक होता लेकिन वास्तविकता ठीक इसके विपरीत है। माननीया मंत्री महोदया ने कहा कि एन०सी०ई०आर०टी० की जानकारी में ऐसी कोई तथ्यात्मक गलतियां नहीं लाई गई है। सभापति महोदय, एन० सी० ई०आर०टी० एशिया का सब से बड़ा प्रकाशन संस्थान है और करीब तीन सौ पुस्तकों की ढाई करोड़ प्रतियां छापी जाती है। इस संस्थान के हमारे संविधान में घोषित जनतंत्र और धर्म निरपेक्षता के मूल्यों की शिक्षा के साथ संगति बैठाने में एक अहम भूमिका अदा की है ताकि हमारे छात्रों को विवेकसम्मत ज्ञान प्रदान हो सके। इसमें एन०सी०ई०आर०टी० की बहुत बड़ी भूमिका है और मुनाफाखोरों के पंजे तोड़ने में भी इसकी बहुत बड़ी भूमिका रही है। लेकिन इस तरह की संस्था एन०सी०ई०आर० टी० जिसके कंधों पर मानक पाठ्यक्रम तैयार करने की जिम्मेदारी है उस संस्था की तरफ से जब पाठ्य पुस्तकें तैयार की जाती हैं और पाठ्य पुस्तकें तैयार हो

नहीं की जाती हैं बल्कि उनका प्रथम संस्करण छपने के बाद जब द्वितीय संस्करण छप जाता है तो उसमें भी पहले सस्करण की गलतियों को दुरुस्त नहीं किया जाता है । मंत्री महोदय को जानकारी नहीं है । एन०सी०ई०आर०टी०को भी जानकारी नहीं है । मैं यह बताना चाहती हूं कि एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा छापी गयी पुस्तक–दसवीं कक्षा की पुस्तक है, "हमारा शासन कैसे चलता है" इसकी पृष्ठ सख्या 138 में यह बताया गया है कि भारत के कुछ राज्यों, जैसे पंजाब, केरल तथा मध्य प्रदेश में एक-सदनीय विधायिकाएं है जबकि 12वीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक, सरकार के अंग में स्पष्ट लिखा है कि जम्मू और काश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और तामिलनाडु तथा उत्तर प्रदेश में द्विसदनीय विधायिकाएं हैं । जाहिर है कि इन पृष्ठों में किस तरह से अंतर्विरोधी तथ्यों को रखा गया है । इसी तरह से 10वीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक, "हमारा शासन कैसे चलता है" की पृष्ठ संख्या 138 की ही एक और पंक्ति है जिसमें यह कहा गया है कि "77 का समूह या 77 देशों का समूह विकासशील देशों के उस समूह को कहते है जिसकी स्थापना, 1964 में प्रथम संयुक्त राष्ट्र व्यापार तथा विकास सम्मेलन ने की थी । जब कि इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या 135 का एक अंश है, "उत्तर दक्षिण" असमानता की जानकारी लोगों को संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन से होता है । इस सम्मेलन के पहले अधिवेशन में 1961 में विकासशील देशों ने 77 देशों के समूह की स्थापना की थी । जाहिर है मंत्री महोदय, तथ्यों की जानकारी में जो गलतियां हैं उनसे अवगत हो गये होंगे । इसी तरह से 12वीं कक्षा की एक और पुस्तक है, "आधुनिक भारत", उसमें भी तथ्यों को गलत ढंग से पेश किया गया है । उसमें बताया गया है कि 1949 में . . **(व्यवधान)** मैं क्वेश्चन ही पूछ रही हूं . . . **(व्यवधान)** उनको जानकारी नहीं हैं . . . **(व्यवधान)** उनको तथ्यों के बारे में जानकारी नहीं आई गयी है ।

(व्यवधान)

कुमारी सरोज खापर्डे : सवाल पूछिए, सप्लीमेंट्री पूछिए . . . **(व्यवधान)** Sir, how much time will she take ?

MR. CHAIRMAN : I have allowed her because she is mentioning some concrete instances. Anyway, will you conclude ?

श्रीमती सरला माहेश्वरी : आप मुझे जानकारी तो देने दीजिए । मंत्री महोदय को जानकारी नहीं है इसलिए बता रही हूं कि ये तथ्य हैं ।

मैं सिर्फ इतना पूछना चाहती हूं कि ये जो गलतियां हैं इन गलतियों को कैसे दुरस्त करेंगे . . . **(व्यवधान)** ।

MR. CHAIRMAN : Please conclude now.

श्रीमती सरला माहेश्वरी : सभापति महोदय, मैं सिर्फ यह जानना चाहती हूं कि ये जो गलतियां पाठ्य पुस्तकों में है, ये गलतियां किस तरह से होती हैं और हमारा एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्य पुस्तकों को छापने में कौन सी पद्धतियां अपना रहा है ताकि उन गलतियों को दुरस्त किया जा सके । प्रथम संस्करण के बाद जब द्वितीय संस्करण छपता है तो क्यों नहीं उन गलतियों को दुरस्त किया जाता है ।

श्री अर्जुन सिंह : आदरणीय सभापति महोदय, यह प्रश्न, एक बिल्कुल व्यापक प्रश्न था कि कौन-सी गलतियां हैं । स्वाभाविक है, आदरणीय सदस्या ने स्वयं कहा है कि 300 के आस पास पुस्तकें छपती हैं, करोड़ों की संख्या में छपती हैं । हर लाइन की हर गलती को तत्काल मालूम कर लेना इतना आसान काम नहीं है । हमने यह नहीं कहा कि कोई गलती हुई नहीं । आपने उस ओर ध्यान आकर्षित किया और मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि जिस ओर आपने ध्यान आकर्षित किया है उस गलती को सुधारा जायेगा ।

श्रीमती सरला माहेश्वरी : मेरा दूसरा सप्लीमेंट्री बहुत छोटा है । आप चिंता मत करिये– क्योंकि मंत्री महोदय अवगत नहीं थे इसलिए मैंने बताना आवश्यक समझा था । मेरा

दूसरा पूरक सवाल यह है कि एन०सी०ई०आर० टी० के बारे में आम तौर पर यह शिकायत होती है कि किताबें सही समय पर मिलती नहीं हैं। छात्रों को जब उनकी जरूरत होती है तो सही समय पर एन०सी०ई०आर०टी० की पस्तकें उपलब्ध नहीं होती है। इसलिए बाजार में हाहाकार मच जाता है। छात्रों को भी कठिनाई होती है तो इस कठिनाई को दूर करने के लिए आप क्या करने जा रहे हैं?

श्री अर्जुन सिंह : सभापति महोदय, ये कठिनाइयां किसी समय में काफी थीं। लेकिन जहां तक मेरी जानकारी है इस दिशा में काफी सुधार हुआ है और अब किताबों के मिलने में और उनको समय पर छापने में उतनी परेशानी नहीं है जैसे पहले थी और भी उसको सुधारा जाना चाहिए इस ओर सतत प्रयास हो रहा है।

श्री शंकर दयाल सिंह : सभापति जी, एन० सी०ई०आर०टी० ने सच में देश में प्रकाशन के क्षेत्र में बहुत बड़ी क्रांति लाई है। जितनी मेहनत करके अच्छी पाठ्य ग्रंथ कम दाम में एन०सी०ई० आर०टी० ने सुलभ कराए है, सुसम्पादित रूप से उसके लिए एन०सी०ई०आर०टी० बधाई की पात्र है लेकिन दो बातों की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं, मंत्री महोदय से मैं जवाब चाहता हूं। पहली बात जो सरला जी ने कहीं पुस्तकों की उपलब्धता और दूसरा यह लेखकों को रायल्टी, जिन लोगों से एन०सी०ई०आर०टी० किताबें लिखवाती हैं, उनको रायल्टी नहीं दे करके एकमुश्त पैसा देती है जबकि वे पुस्तकें लाखों की संख्या में बिकती हैं। लेकिन एक बार पैसा दे करके वे मुक्त हो जाते हैं, जो कि आज के युग में लेखकों का शोषण कहा जाएगा। दूसरी बात है कि जिन लेखकों की पुस्तकें छपती हैं उनकी भी पुस्तकें उपलब्ध नहीं होती हैं। इसका उदाहरण मैं स्वयं हूं। दो पुस्तकें मेरी एन०सी०ई०आर० टी० ने छापी हैं पं० जवहार लाल नेहरु पर और सरदार वल्लभ भाई पटेल पर, दोनों में रायल्टी नहीं दी है बल्कि एकमुश्त पैसा दिया और इतना कम दिया कि यहां सदन में नहीं कहना चाहता। दूसरी बात यह कि जवाहर लाल नेहरु की किताब मिलती है, सरदार वल्लभ भाई पटेल की पुस्तक छपी वह बाजार में खोजकर मैं हार गया, कहीं उपलब्ध नहीं होती है। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि रायल्टी और पुस्तकों की उपलब्धता दोनों के संबंध में वे क्या कार्यवाही कर रहे हैं?

श्री अर्जुन सिंह : आदरणीय सभापति महोदय, जहां तक पुस्तकों की उपलब्धता का सवाल है जिस विशेष पुस्तक का आपने जिक्र किया है मैं अवश्य जानकारी लूंगा कि वह पुस्तक उपलब्ध क्यों नहीं है। जहां तक रायल्टी और एक मुश्त देने का प्रश्न है, अभी तक जो प्रचलित है मैं उसके बारे में तत्काल यहां टिप्पणी नहीं करना चाहता, मैं इस बारे में तत्काल जानकारी लेकर ऐसा क्यों किया जाता है, उसको बदला जा सकता है या नहीं, फिर मैं उसके बारे में जानकारी दे सकूंगा।

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, मूल प्रश्न के उत्तर में मंत्री महोदय ने कहा था कि एन०सी०ई०आर०टी० के ध्यान में ऐसी कोई गलती नहीं लाई गई जो तथ्यात्मक हो, लेकिन जब सरला जी ने तथ्यात्मक गल्ती की ओर ध्यान दिलाया तो मंत्री महोदय ने कहा कि चूंकि अब ध्यान में लाई गई है इसलिए वह उसको दुरुस्त करेंगे और हर लाइन की हर गलती देखी नहीं जा सकती, वह गलती कोई लाइन की लिखाई की या व्याकरणात्मक नहीं थी, बल्कि तथ्यात्मक गलती थी तो मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहूंगी कि बजाय इसके कि कोई संसद सदस्य ही संसद के अंदर वह जानकारी उनके ध्यान में लाए और तब दुरुस्ती का काम हो, क्या वह किसी समिति का गठन करेंगे जो एन०सी०ई०आर०टी० की पुस्पकों को तथ्यात्मक ढंग से देख ले और जांच कर ले। उसके बाद उसके अंदर की गलतियां तुरंत बता दी जाएं ताकि दुरुस्ती का काम तुरंत हो सके और किसी संसद सदस्य के बताने तक इंतजार न करना पड़े?

श्री अर्जुन सिंह : मैं तो सोच रहा था कि कुछ गलतियां आप भी बतायेंगी ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : आप मुझे कमेटी में रख दीजिए मैं सारी गलतियां बता दूंगी । . . . **(व्यवधान)** यह बहुत सीरियस बात है, मजाक में नहीं लीजिए । देखिए बार-बार एडीशन छप रहा है और गलत छप रहा है । यह तो उनके ध्यान में आ गया, अब अगर ए क समिति का गठन हो जाए तो तथ्यात्मक ढंग से उन किताबों की जांच करती चले तो दुरुस्ती का काम तुरंत हो सकता है । मैंने बड़ा सीरियस सुझाव रखा है ।

श्री अर्जुन सिंह : मैं उत्तर भी उतना ही सीरियस दूंगा आदरणीया, केवल यह मैंने इसलिए कहा कि क्योंकि सीरियस बात को भी सामने आने के पहले थोड़ा सा लाइट होना चाहिए यह मैं समझता हूं कि कोई भी पुस्तक प्रकाशन की जो संस्था होती है उसके पास इस प्रकार की प्रक्रिया होती है कि कोई गलत छपे तो उसको रिवाइज करते समय दुरुस्त किया जाए और इस प्रकार की प्रक्रिया यहां भी है । यह संभव है कि उस प्रक्रिया के होते हुए भी कोई बात नजर में न आए और इस संदर्भ में यह उत्तर दिया गया है । यह मैंने कभी नहीं कहा कि एन०सी०ई०आर०टी० की कोई पुस्तक में कोई गलती हो ही नहीं । लेकिन जैसा कि आप कह रही हैं उसको और व्यवहारिक बनाने की दिशा में हम जरूर विचार करेंगे ।

SHRI M.A. BABY : In the context of errors in some books published by the N.C.E.R.T., Sir, with your permission, I would like to draw the attention of the hon. Minister to certain issues related to the same topic but in a wider angle. We understand that there is so much of fundamentalist and communalist propaganda going on in our country. I came to know about certain references in some text-books published by the N.C.E.R.T. in which, while referring to different religions, it is stated that Rahim goes to a masjid, Ram goes to a temple, John goes to a church. Like that, there is some reference in a particular book. Sir, I would like to appeal that this portion should be thoroughly modified.

AN HON. MEMBER : Please ask a question.

SHRI M.A. BABY : This portion should be thoroughly modified. I would like to know from the Minister whether a serious attempt would be made to study the contents of the book from secular viewpoint. For example, Rahim can go to a temple. Similarly, Ram also can go to a masjid. Sir, there are people like me who like to go to all places of worship. There are people like us who profess religion as human religion. so, it should not be that Rahim should have faith only in Islam and Ram should have faith only in Hindusm and things like that. Therefore, when we teach religion, a secularist approach should be given. People, especially children, should be made to understand that it is not necessary that one should believe only in a particulary religion. So, a thorough examination of text-books should be done. When religion is taught, it should be taught in the spirit of secularism and with a scientific temper. Sir, I remember that while dedicating the Bhakra-Nangal Dam to the nation, Pandit Nehru referred to the Dam as the temple of modern India. So, this should be the attitude in the modern age. I would like to know from the hon. Minister whether a thorough appraisal of the text-books, especially in the context of the problems that our society is facing, would be undertaken by the Government.

MR. CHAIRMAN : Unfortunately, the question is about factual mistakes, not ideological mistakes.

SHRI ARJUN SINGH : Sir, mistake is a mistake, whether it is factual or ideological.

SHRI M.A. BABY : Arjun Singhji is the best Minister to answer this question.

SHRI ARJUN SINGH : I don't think I am the best Minister to do anything.

SHRI DIGVIJAY SINGH : We consider him as the Best Minister.

SHRI ARJUN SINGH : I would like to draw the attention of the House to the fact that there is a code component which has been decided upon which includes India's common cultural heritage, egalitarianism, democracy, secularism, equality of sex, protection of environment and inculcation of scientific temper

All the books are produced with this background. This is the code which pervades all the publications. Now, the matter which has been referred to by the hon. member is, I think, factual on one part and also it is open to the interpretation which you are giving. I think we will have to see the balance. It should not be presumed that any action needs to be taken against somebody, if he goes to some otherplace of worship. If a Hindu wants to go to a temple or a church, I think, he is absolutely free to do so. There is nothing to suggest that he cannot do it and *vice versa*. Whether that should be included in the texts or whether that would be the right thing to do, I don't know. So, it will have to be looked at from both angles. If what you said and what the inference you are drawing is being drawn from certain textbooks or any textbooks, it would certainly be looked into in a broader context.

श्रीमती वीणा वर्मा : सभापति जी, अभी माननीय मंत्रीजी ने बताया कि एन०सी०ई०आर०टी की पुस्तकें वैज्ञानिक मानसिकता, समता, प्रजातंत्र, धर्म-निरपेक्षता व लैंगिक समानता को पुख्ता करने के लिए व सामाजिक अड़चनों को दूर करने के उद्देश्य से लिखी गयी हैं, लेकिन देखा यह गया है कि इतिहास लेखन में मुख्यतः महिलाओं की भूमिका को बहुत कम महत्व दिया गया है। उनके ऊपर कोई शोध नहीं किया गया है या बहुत सरसरी तौर पर उनका वर्णन आता है। सभापति जी, इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके बारे में भी अधिकतर एन०सी०ई०आर०टी० की किताबों में अशुद्धियां रहती हैं, जैसेकि व्यक्ति का अर्थ पुरुष से ही लिया जाता है, "जुबान" और "जबान" में बहुत कम फर्क किया गया है। सभापति जी, मैंने 3 अगस्त, 1988 को एक प्रश्न एन०सी०ई०आर०टी की पुस्तकों के बारे में किया था। उसमें मैंने तीसरी कक्षा की सामाजिक ज्ञान की किताब में 63 अशुद्धियों की तरफ इस सदन का ध्यान आकर्षित किया था। माननीय मंत्रीजी कृपया इसे देखने का कष्ट करें। साथ ही कक्षा 5 की पुस्तक में 23वें अध्याय में, महिलाओं की भूमिका को गौण करके बताया है या जब उनका सांस्कृतिक इतिहास लिखते हैं तो महिलाओं की भूमिका को गौण बताया जाता है। उस एक-दो उदाहरण जैसेकि अहिल्या बाई की भूमिका के संबंध में हर कोई जानता है, लेकिन एक किताब है, "महान पुरुषों एवं महिलाओं की प्रेरणात्मक जीवनी" उसमें अहिल्या बाई को सिर्फ मल्हारराव होल्कर की पुत्रवधु या खांडेराव की बुद्धिमान व कर्त्तव्यनिष्ठ पत्नी के रूप में देखा गया है। और बताया गया कि वह अपनी व्यवहार कुशलता तथा गुणों की बदौलत अहिल्या बाई महारानी बनी। फिर अन्त में जब पांच प्रश्न पूछे जाते हैं उन किताबों में, तो उसमें अहिल्या बाई के संबंध में एक भी प्रश्न नहीं है। जीजाबाई के बारे में सब कोई जानते हैं कि शिवाजी महाराज की माताजी थी और शिवाजी महाराज के चरित्र निर्माण में, उनके जीवन की भूमिका में एक महत्वपूर्ण रोल अदा किया है जीजाबाई ने, लेकिन जीजा बाई के बारे में एन०सी०ई०आर०टी० की किताबों में या एन०सी०ई०आर०टी० का उदाहरण देते हुए जो किताबें छपती है उसमें महिलाओं की भूमिका इस तरह से है कि शिवाजी महाराज के लिए चरित्र निर्माण व जीवन निर्माण में अहम योगदान था और यह चौथी कक्षा की पुस्तक में है, पाठ्य पुस्तक में, कि शिवाजी को उचित शिक्षा नहीं मिली। इस तरह के सेण्टेन्स लिखे हुए हैं कि उनके पिता प्रायः बाहर रहते थे, उसकी मां तथा उनके एक रिश्तेदार दादाजी कोणदेव ने शिक्षा दी। अब शिवाजी महाराज की माता के लिए इस तरह से लिखा जाता है।

MR. CHAIRMAN : You have made your point. You don't have to elaborate.

श्रीमती वीणा वर्मा : जी सर। मैं बहुत संक्षिप्त में पूछूंगी। तो इस तरह से मैं यह कहना चाहती हूं कि महिलाओं की भूमिका को बहुत कम महत्व दिया गया है, जबकि उनका योगदान हर तरह से समाज के विकास में और देश के चरित्र निर्माण में रहा है।

MR. CHAIRMAN : Please don'tr read. Please conclude.

श्रीमती वीणा वर्मा : सर, मैं नहीं पढ़ रही। मैं मंत्री जी से यह पूछना चाहती हूं कि क्या कोई ऐसी रिसर्च वह करवाएंगे, ऐसी शोध कोई करवाएंगे

कि महिलाओं की भूमिका देश के विकास में या चरित्र निर्माण में या इतिहास लेखन में क्या रही है ? क्या ऐसी कोई एजेन्सी है, जिससे इस तरह की भूमिकाओं को अलग से आप जान सकें, देख सकें ताकि महिलाओं को गौण भूमिका दिलाई जा सके, देश के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका दिलाई जा सके ?

श्री अर्जुन सिंह : आदरणीय सभापति महोदय, मैं माननीय सदस्या का आभारी हूं इस प्रश्न के लिए, भारत में महिलाओं के योगदान के बारे में शोध करने की आवश्यकता मैं तो महसूस नहीं करता हूं। यह इतना सर्वविदित है, इतना प्रमुख और व्यापक है कि इसके शोध की आवश्यकता नहीं लेकिन, अगर उसका सही प्रतिबिंब किसी पाठ में नहीं है, वह जरूर देखने की बात है। जिनका जिक्र यहां माननीय सदस्या ने किया है, उस संदर्भ में मैं स्वीकार करता हूं और उसी संदर्भ में महिलाओं के प्रति और देश की महान महिलाओं के प्रति, जिन्होंने सारे भारत के इतिहास को रचने में सहायता की है या नई नई तरह से प्रेरणाएं दी है, निश्चित रूप से उनका उल्लेख उसी संदर्भ में होना चाहिए। यह प्रयास होगा।

MR. CHAIRMAN : Questoin No. 142.

Report of Sardar Sarovar Project Review Committee

*142. SHRI CHIMANBHAI MEHTA :†

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY :

Will the Minister of WATER RESOURCES be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the Gujarat High Court has ordered to keep the report of Sardar Sarovar Project Review Committee, appointed last year, in a sealed cover till the High Court gives its verdict on the tenability of the formation of the SSP Review Committee;

(b) whether construction is going on SSP dam, main canal, branch canal and distributaries;

(c) if so, the details regarding the progress of construction of the Dam height, Main Canal-Branch Canal, distributaries including cement lining and expenditure incurred on each head;

(d) the details regarding the Canal head power Stations, installation of turbines and probable date of power generation; and

(e) whether it is a fact that Kutch-Saurashtra Vikas Sabha Conference held in Rajkot last November has requested that concentration be made on Main Canal works upto Kutch Saurashtra end so that drinking water supply gets priority ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF WATER RESOURCES (SHRI P.K. THUNGAN) : (a) The High Court of Gujarat at Ahmedabad in its order dated 26th October, 1993 directed that the Secretary of the Ministry of Water Resources shall maintain secrecy and confidentiality of and in respect of the report of the Five Member Group on Sardar Sarovar Project, till further orders.

(b) Yes, Sir.

(c) A Statement is laid on the table of the House.

(d) While the first unit of Canal Head Power House is scheduled to become operational by August, 1995, all five units are scheduled to become operational by December, 1995.

(e) Yes, Sir.

*†The Question was virtually asked on the floor of the House by Shri Chimanbhai Mehta.